

## Section-1

Ans ①

जल स्तर घास को परिभाषित:  $\Rightarrow$  भूमिगत

जल के प्रमुख स्रोत कुएँ, झरने, झील, अन्तः स्फुटन गैलरियाँ तथा संरन्ध्र गैलरिया है।

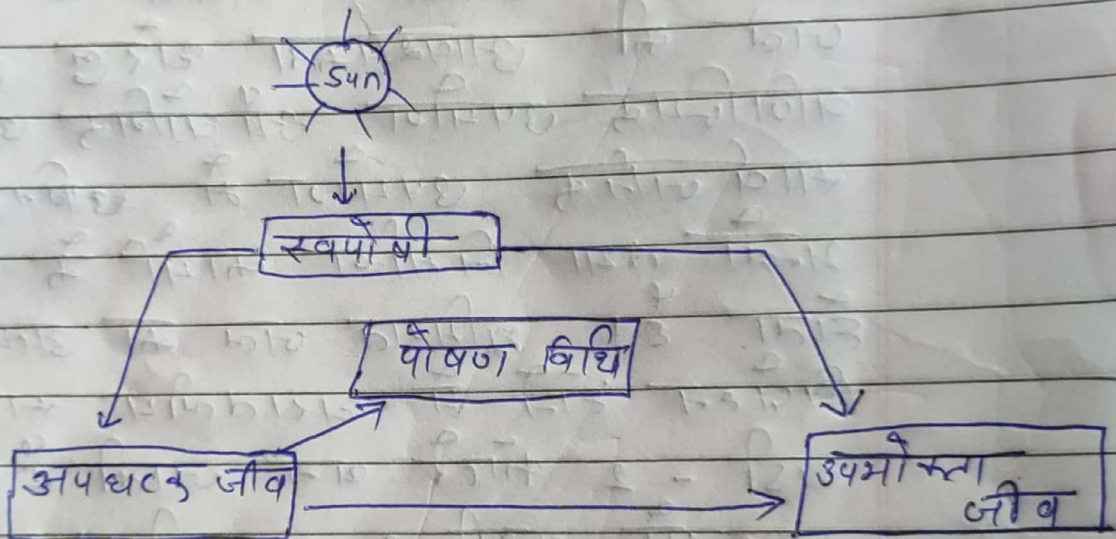
जल स्तर का नीचे होना  $\Rightarrow$  शहरीकरण एवं बढ़ती हुई जनसंख्या को जल आपूर्ति व अन्य कार्यों के लिए सतही जल के स्रोतों से जल की आपूर्ति पूरी नहीं हो पाती है। इसलिए आवश्यकता पूर्ति हेतु भूमिगत जल को पम्पों की सहायता से भूमि सतह पर लाकर उपयोग में लाया जाता है। नगरों में भूमिगत जल की आवश्यकता घरेलू उपयोग, वाणिज्यिक उपयोग और औद्योगिक उपयोग तथा सार्वजनिक उपयोग में अग्निशामक यंत्रों तथा निर्माण कार्यों के लिए होता है। भूमिगत जल का अत्यधिक विपादन होने से धरातलीय सतह के नीचे बड़ी - 2 कोटरी बन जाती है। जिसकी वजह से कभी - 2 धरातलीय सतह घसक जाती है। इस समस्या का निराकरण करने के लिए (i) सतही संचयन (ii) भूमिगत जल का पुनर्निर्माण सतह संचयन में वर्षा जल को रोक कर बागवानी एवं सिंचारी इत्यादि कामों के लिए अथवा पारकर, तालाब, झील इत्यादि में एकत्रित वर्षा स्तर का उपयोग भी एक कारगर उपाय है।

## Section - (2)

Ans ①

परितन्त्र :- जीव सर्वेव समुदाय में रहते हैं तथा समुदाय में प्रत्येक जीव एक दुसरे को प्रभावित करते हैं। साथ ही वातावरण भी अपना प्रभाव जीवों पर डालता है। इस प्रकार जीवों का वातावरण से अटूट सम्बन्ध होता है। समुदाय तथा वातावरण का यह संरचनात्मक तथा क्रियात्मक तन्त्र परितन्त्र या परिस्थितिक तन्त्र कहलाता है।

Ex - पृथ्वी एक पारितन्त्र है।



परिस्थितिक घटक :- परिस्थितिक तन्त्र के आधार पर घटकों को दो भागों में विभाजित किया गया है।

- ① जैविक घटक      ② अजैविक घटक

① जैविक घटक - (i) उत्पादक - इसमें हरे पौधे-पौधे आते हैं।

(ii) उपभोक्ता - वे सभी जीव जो अपने भोजन के लिए पौधों पर निर्भर हैं।

① प्राथमिक उपभोक्ता - इन्हें शाकाहारी जीव होते हैं। जैसे - भूकरी, खरगोरा

② द्वितीयक उपभोक्ता - इसमें मांसाहारी प्राणी होते हैं। जैसे - शिडिया, टिपकली

③ तृतीयक उपभोक्ता - इसमें मांसहारी प्राणी होते हैं जो छोटी-छोटी प्राणियों को मार कर खाते हैं।

- प्रभाव :-
- ① जनसंख्या घनत्व में वृद्धि
  - ② पौधों का दहन
  - ③ प्रदूषण
  - ④ शिक्षा का प्रसार
  - ⑤ सामाजिक सहनशीलता में कमी।